एनएसआई : शिक्षण ही नहीं, उद्योग को सहयोग भी

शुगर पर वैविध्य शोध करने वाला देश का अकेला संस्था

सन् 1936 में स्थापित राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कई मायनों में महत्वपूर्ण है। यह अलग बात है कि विभिन्न कारणों से यह संस्थान बहुत अधिक चर्चा में नहीं रहता है लेकिन इसका योगदान नकारा नहीं जा सकता है। देश में अपनी तरह का यह इकलौता संस्थान न केवल औद्योगिक महत्व के

● प्लेसमेंट के साथ स्टार्ट अप के लिये भी छात्रों को सपोर्ट

लिये जरूरी है बल्कि भविष्य के भारत की कई आवश्यक्ताओं को पूरा करने की दिशा में योगदान देने को तत्पर है....उसमें से सबसे महत्वपूर्ण है इथनाल। जी हां,

जानकारी देते एनएसआई निदेशक।

इथनाल वह उत्पाद है, जो इंधन की आवश्यक्ता को पूरा करेगा। यह पेट्रोल में मिलाकर प्रयोग किया जायेगा, जिससे क्रूड की खपत को नियंतित किया जा सकता है। सबसे जरूरी बात यह है कि इथनाल हमें आसानी से प्राप्त हो जायेगा, यह गन्ने से तैयार किया जाता है। वास्तव में नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट

● एनएसआई कई महत्वपूर्ण दिशाओं में कर रहा काम

अर्थात एनएसआई कई दिशाओं में एक साथ काम कर रहा है और वह सभी काफी महत्वपूर्ण है। संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने संस्थान के बारे में विस्तार से चर्चा की.....

छात्र हैं, फैकल्टी की दिक्कत

यह पर कुल 9 कोर्स हैं और उनमें 299 छात्रों को शिक्षा दी जाती है। अलग-अलग समयावधि के पाठ्यक्रम हैं, जिनको पूरा करने के उपरांत छात्र न केवल बेहतर प्लेसमेंट पा सकते हैं बल्कि स्टार्ट अप पर भी फोकस कर सकते हैं। बीते साल हमारा प्लेसमेंट 99 फीसदी हो गया है, शायद कुछ बच्चे अभी जाब नहीं पा सके हो लेकिन उन्हें भी मिल जायेगी। कोरोना के चलते थोड़ा सा प्रभाव तो पड़ा ही है। इतना जरूर है कि कुछ वक्त से फैकल्टी की समस्या है, दरअसल नयी भर्ती नहीं होने के कारण यह दिक्कत हो रही है। हमने अपनी आवाज संबंधित व्यक्तियों तक पहुंचा दी है। उम्मीद है कि जल्द ही कुछ बेहतर परिणाम सामने आयेंगे।

चीनी मिलों को सहयोग

मेरे समेत यहां पर काम करने वाले बहुत सारे लोग चीनी मिलों में विजिट करते हैं ताकि हम उनको सही जानकारी दे सकें, आज चीनी का उत्पादन सामान्य बाततत नहीं है क्योंकि शक्कर का मतलब सिर्फ वही नहीं है, जो एक आदमी खा रहा है। शुगर की इतनी ज्यादा वैरायटी है कि आप गिनने लग जायेंगे। इसके अलावा भी तमाम पहलू हैं, जिन पर काम होता रहता है। दरअसल गन्ने का उत्पाद सिर्फ 6 माह का विषय है लेकिन हम चाहते हैं कि यह मिल पूरे बरस काम करेंगे, इससे तमाम फायदे होंगे। जो रोजगार से लेकर राजस्व तक हर पहलू में महत्वपूर्ण है।

चाकलेट, कैंडी और बियर

मुझे नहीं लगता है कि किसी ने सोचा भी होगा कि नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट चाकलेट, कैंडी और बियर तक पर बात करेगा लेकिन अब हम कर रहे हैं क्योंकि यह समय की मांग है। वैविध्यता वह पहलू है, जिसे पिछले कुछ सालों में ही एनएसआई ने अपनाया है। हमारे वैज्ञानिकों और छात्रों ने खुद चाकलेट बनायी और शोकेस की है, अब हम उस तकनीकी को युवाओं तक पहुंचा रहे हैं ताकि वह चाहें तो स्टार्टअप शुरू कर सकें। गुड़ से चाकलेट बनायी है और जल्द ही जैम, जेली और सास पर भी ध्यान लगाने की तैयारी है।

एचबीटीआई में था..

दरअसल आईआईटी की ही तरह एनएसआई भी एक समय एचबीटीआई में ही था। 1936 में यह अलग होकर यहां आया और तब से लेकर आज तक अपना योगदान दे रहा है। देश में दो और ऐसे संस्थान हैं, जो इस दिशा में काम कर रहे हैं लेकिन दोनों ही निजी संस्थान हैं और एनएसआई के मुकाबले में कहीं नहीं ठहरते हैं। यह कहा जा सकता कि दरअसल एनएसआई केवल देश ही नहीं वैश्विक स्तर पर इकलौता ऐसा संस्थान है, जो शुगर तकनीकी पर काम करता है और अब तक हम विदेशों में भी कंट्रीब्यूट कर रहे हैं। उन्हें केवल टेक्नोलाजी ही नहीं दे रहे हैं बल्कि स्टैबलिशमेंट में भी सहयोग कर रहे हैं।

इथनाल पर काम चल रहा

यह तय है कि इथनाल का भविष्य बहुत ही अच्छा है। पेट्रोल में दस फीसदी ब्लेंड का लक्ष्य रखा गया है और आगे इसे फीसदी तक किया जा सकता है। निश्चितत तौर पर पेट्रोलियम खपत को देखते हुये यह एक अच्छा प्रोग्राम है, खास बात यह है कि यह बहुत ही आसानी के साथ तय भी हो जाता है। चीनी मिलों में ही इसे तैयार किया जा सकता है। इसे फ्यूल की तरह के उपयोग करने का कार्यक्रम कई जगह पर चल रहा है, हमारी जरूरतें बड़ी है इसलिये यहां पर इसे व्यापक स्तर पर उपयोग में लाया जा सकता है।